भारतीय समाज में दहेज का उद्‌भव एवं विकास

पवन कुमार

दहेज प्रथा ऐसी एक कुरीति बनकर उभरी है जिसने ना जाने कितने ही परिवारों को अपनी चपेट में ले लिया है। इस प्रथा के अंतर्गत युवती के पिता उसे ससुराल विदा करते समय तोहफे और कुछ धन देता है। अब यही धन वैवाहिक संबंध तय करने का माध्यम बन गया है। वर पक्ष के लोग मुंहमांगे धन की आशा करने लगे हैं जिसके ना मिलने पर स्त्री का शोषण होता है।

प्राचीन समय में विवाह के संस्कार और रीति–रिवाज कन्यादान के साथ जुड़े थे। हिन्दू धर्मशास्त्रों के अनुसार धार्मिक रूप से किया गया कोई भी दान तब तक पूर्ण नहीं माना जाता था जब तक कि प्राप्तकर्ता को कुछ दक्षिणा न दिया जाय। इसलिए जब दूल्हे को कन्या दान के रूप में दी जाती थी तो उपहार के रूप में कुछ नगद दिया जाता था जिसे वर दक्षिणा कहा जाता था। परन्तु वरदक्षिणा का यह स्वरूप सभी हिन्दु समुदाय में प्रचलित नहीं था। वरदक्षिणा का यह रूप कतिपय ब्राह्मणों के बीच प्रचलित था।

वर्तमान में दहेज एक गम्भीर समस्या बनी हुई है। इसके कारण माता–पिता के लिये लड़कियों का विवाह एक अभिशाप बन गया है। दहेज के कारण न जाने कितनी स्त्रियों को अनेक प्रकार की यातनायें दी जाती हैं।